



प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर ने ओडिशा में टिकाऊ निर्मित पर्यावरण के लिए कम कार्बन निर्माण सामग्री को मुख्यधारा में लाने पर कार्यशाला का आयोजन किया

भुवनेश्वर, 31 अक्टूबर 2025: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर ने डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स के सहयोग से और समर्थित, "ओडिशा में निर्मित पर्यावरण को बदलने के लिए कम कार्बन निर्माण सामग्री को मुख्य धारा में लाने" पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया, क्योंकि राज्य तेजी से शहरी विस्तार और टिकाऊ बुनियादी ढांचे के लक्ष्यों की ओर बढ़ रहा है। इस पहल को इंडियन मेटल एंड फेरो अलॉयज (आईएमएफए) ने भी समर्थन दिया था।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए श्रीमती. उषा पट्टि, आईएएस, प्रमुख सचिव, आवास एवं शहरी विकास विभाग, ओडिशा सरकार ने विकास को पर्यावरणीय रूप से सुदृढ़ बनाने में इंजीनियरों और नीति निर्माताओं की जिम्मेदारी पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा: "हम निर्माण में जो कुछ भी करते हैं उसे सचेत रूप से स्वस्थ पर्यावरण में योगदान देना चाहिए। हम केवल तभी प्रगति कर सकते हैं जब हमें विश्वास हो कि हम कर सकते हैं - और यह सुनिश्चित करें कि हमारा विकास हरा-भरा और पर्यावरण-अनुकूल हो।" उन्होंने सी एंड डी अपशिष्ट उत्पादों जैसी मुख्यधारा की टिकाऊ सामग्रियों के लिए विनियमों, क्षमता निर्माण और उद्यमिता का समर्थन करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

संस्थागत दृष्टिकोण को साझा करते हुए, आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रोफेसर श्रीपाद कर्मलकर ने शिक्षा-उद्योग-सरकारी तालमेल की बढ़ती आवश्यकता पर जोर दिया: "उद्योग, शिक्षा और सरकार के बीच मजबूत कनेक्टिविटी की आवश्यकता बढ़ रही है ताकि उच्च शिक्षा संस्थानों में बनाया गया ज्ञान तेजी से ठोस सामाजिक प्रभाव में तब्दील हो सके। सामग्री राष्ट्रीय विकास का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, और ओडिशा में बुनियादी ढांचे के विकास के पैमाने के साथ, उत्सर्जन को प्रबंधित करने के लिए उपयुक्त निर्माण सामग्री आवश्यक है। आईआईटी भुवनेश्वर सार्थक योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है। यह सहयोग और सामग्री-उन्मुख नवाचार में एक राष्ट्रीय केंद्र के रूप में उभर रहा है।

अपने विशेष संबोधन में, आईआईटी मद्रास के प्रोफेसर मनु संधानम ने सीमित निर्माण संसाधनों पर भारत की निर्भरता और मजबूत नीतिगत प्रयास की आवश्यकता को रेखांकित किया: "हमें प्राकृतिक संसाधनों के जीवन का विस्तार करना चाहिए और उप-उत्पादों और पुनर्नवीनीकृत सामग्रियों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना चाहिए। वैज्ञानिक प्रमाण यहां है - अब वैकल्पिक सामग्रियों का उपयोग करने और जमीन पर बदलाव लाने के लिए साहसिक कदम उठाने का समय है।" उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों और औद्योगिक उप-उत्पादों दोनों के साथ ओडिशा इस परिवर्तन का नेतृत्व करने के लिए अच्छी स्थिति में है।

उद्घाटन सत्र में, प्रोफेसर दिनाकर पासला, डीन (प्रायोजित अनुसंधान और औद्योगिक परामर्श), आईआईटी भुवनेश्वर ने स्वागत भाषण दिया और कहा: "जैसे-जैसे ओडिशा तेजी से बढ़ रहा है, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारा बुनियादी ढांचा विकास स्थिरता लक्ष्यों के साथ जुड़ा हुआ है। अकादमिक और उद्योग सहयोग जलवायु-लचीली सामग्रियों को अपनाने में तेजी ला सकते हैं।"

डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स की सुश्री देवप्रिया डी मुंशी ने व्यवहार और नीतिगत बदलाव पर जोर दिया।

कार्यक्रम के दौरान ओडिशा के निर्मित पर्यावरण के लिए ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन अनुमान और 'भारत के निर्मित पर्यावरण में डीकार्बोनाइजेशन के लिए रास्ते' नामक कार्रवाई योग्य सिफारिशें प्रदान करने वाली एक तकनीकी रिपोर्ट का भी अनावरण किया गया।

डॉ. उमेश चंद्र साहू, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर, आईआईटी भुवनेश्वर ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

कार्यशाला में ओडिशा के निर्मित पर्यावरण को डीकार्बोनाइजिंग करने; एलसी3 सीमेंट, सिंटेड एग्रीगेट्स, बायोमास-आधारित कंक्रीट और बिना पकी ईंटों सहित कम कार्बन सामग्री में नवाचार; सी एंड डी अपशिष्ट मूल्यांकन और परिपत्र अर्थव्यवस्था प्रथाएं; सतत सड़क अवसंरचना समाधान; तकनीकी व्यवहार्यता, मानक और बाजार अपनाने की चुनौतियाँ। आईआईटी भुवनेश्वर, आईआईटी मद्रास, केआईआईटी भुवनेश्वर के विशेषज्ञों, आईएमएफए सहित उद्योग भागीदारों और हैदराबाद और ठाणे के अपशिष्ट-प्रसंस्करण संगठनों ने तकनीकी विचार-विमर्श में योगदान दिया। अंतिम सत्र में एक पैनल चर्चा ने नीतियों, उद्योग सहयोग और अनुसंधान-से-अभ्यास संबंधों को सक्षम करने के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि उत्पन्न की।

कार्यशाला का समापन करते हुए, प्रतिभागियों ने सामूहिक रूप से सहमति व्यक्त की कि सक्षम नीतियां, अनुसंधान-से-अभ्यास प्रयास और हरित उद्यमिता पूरे ओडिशा में कम कार्बन निर्माण सामग्री को अपनाने में तेजी लाने के लिए महत्वपूर्ण होगी।
